इंटरनेशनल मार्केट में कम हैं दाम

सब्सिडी के बावजूद रॉ शुगर का एक्सपोर्ट नहीं

[जयश्री भोंसले | पुणे]

एक्सपोर्ट सब्सिडी के बावजूद देश से कच्ची चीनी (रॉ शुगर) का एक्सपोर्ट फायदेमंद नहीं रह गया है। दरअसल, डोमेस्टिक मार्केट में पिछले कुछ हफ्तों में चीनी की कीमत 24 पर्सेंट तक बढ़ी है। इंटरनेशनल मार्केट में जब तक चीनी महंगी नहीं होती, भारत से इसका एक्सपोर्ट नहीं हो पाएगा। देश में फरवरी में चीनी के दाम में तेजी आनी शुरू हुई थी और मार्च में यह पीक पर पहुंच गई। इसके बाद एक्सपोर्ट कॉन्ट्रैक्ट्स की संख्या कम हुई है।

फरवरी में एक्स-मिल शुगर प्राइस 25 रुपये किलो था, जो अप्रैल में बढ़कर 32 रुपये किलो हो गया है। चीनी के दाम में बढ़ोतरी की कई वजहें हैं। क्रशिंग सीजन खत्म होने को है। इसलिए मिलों पर चीनी बेचने का दबाव नहीं है। बैंकों से मिलों को रियायती शर्तों पर लोन मिला है। वहीं अगले सीजन में अल नीनो के चलते गन्ने की पैदावार कम होने की आशंका भी बढ़ी है। इन बातों का असर डोमेस्टिक मार्केट में चीनी के दाम पर पड़ा है।

घटने लगे कॉन्ट्रैक्ट्स

- **देश में** फरवरी में चीनी के दाम में तेजी आनी शुरू हुई थी और मार्च में यह पीक पर पहुंच गई। इसके बाद एक्सपोर्ट कॉन्ट्रैक्ट्स की संख्या कम हुई है
- **फरवरी में** एक्स-मिल शुगर प्राइस 25 रुपये किलो थी, जो अप्रैल में बढ़कर 32 रुपये किलो हो गई
- **चीनी के** दाम में बढ़ोतरी की कई वजहें हैं। क्रशिंग सीजन खत्म होने को है। इसलिए मिलों पर चीनी बेचने का दबाव नहीं है
- **अगले सीजन** में अल नीनो के चलते गन्ने की पैदावार कम होने की आशंका भी बढ़ी है

मुंबई बेस्ड एक शुगर एक्सपोर्टर ने बताया, 'एक्सपोर्ट हमारे लिए फायदेमंद नहीं रह गया है। इसलिए नए कॉन्ट्रैक्ट साइन नहीं किए जा रहे हैं।' सब्सिडी को शामिल करने के बाद भी विदेश में कच्ची चीनी बेचने पर 27.50 रुपये किलो की कीमत मिलेगी। वहीं डोमेस्टिक मार्केट में अभी एक किलो चीनी 32 रुपये के भाव पर बिक रही है।

शुगर एक्सपोर्ट के लिए पहले जो कॉन्ट्रैक्ट्स हुए थे, वे जून तक पूरे किए जाएंगे। बारिश का सीजन शुरू होने तक यह सिलसिला चलता रहेगा। हालांकि मानसून सीजन में चीनी की सप्लाई मुश्किल हो जाती है। मौजूदा शुगर सीजन (अक्टूबर 2013 से नवंबर 2014) में भारत ने 19 लाख टन चीनी का एक्सपोर्ट किया है। इसमें 8.5 लाख टन रॉ शुगर है। यह जानकारी इंडस्ट्री सूत्रों ने दी है। मौजूदा शुगर सीजन में कुल शिपमेंट 25 लाख टन रहने की उम्मीद है, जिसमें से रॉ शुगर 11-12 लाख टन हो सकता है।

वहीं 2013-14 देश में सरप्लस शुगर प्रॉडक्शन का 5वां साल है। देश में फरवरी 2013 में एक्स-मिल शुगर प्राइस 31 रुपये किलो था, जो नवंबर में क्रशिंग सीजन शुरू होने पर घटकर 28 रुपये किलो रह गया। वहीं फरवरी में दाम 25 रुपये किलो हो गए थे। केंद्र सरकार ने रॉ शुगर एक्सपोर्ट के लिए 3,300 रुपये प्रति टन की सब्सिडी दी है। उसने मिलों को किसानों का बकाया चुकाने के लिए इंटरेस्ट फ्री लोन दिलाने का भी इंतजाम किया है।

इंडस्ट्री का कहना है कि इंटरनेशनल मार्केट में चीनी की कीमत बढ़ने पर ही भारत से इसका एक्सपोर्ट फिर से किया जा सकता है।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के डायरेक्टर जनरल अबिनाश वर्मा ने बताया, 'अगर इंटरनेशनल मार्केट में चीनी की कीमत 18 सेंट्स प्रति पाउंड से ज्यादा होती है, तो भारत से एक्सपोर्ट शुरू हो सकता है।' अभी वर्ल्ड मार्केट में रॉ शुगर की कीमत 17 सेंट्स है।

Economic times

7/4/14